महेन्द्रलाल सरकार का होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में योगदान

सिराज खान[1], बी. के. श्रीवास्तव[2]

1, ज्ञानोदय कॉलेज जैसीनगर सागर म.प्र. 2, डा. हरिसिंह गौर विश्वविघालय सागर म.प्र.

शोध सारांश

भारत ने अपने अनमोल रत्नों में से एक कीर्तिमान रत्न और होम्योपैथी के पहले और सबसे बेहतर चिकित्सक को खोया है। उनकी मृत्यु ने दुर्भाग्यवष हिन्दुस्तान में होम्योपैथी के क्षेत्र में एक बहुत बड़े स्थान को रिक्त किया है और हमें उनकी जगह लेने वाले जिम्मेदार ऐसे कंधे जिन पर उनकी जिम्मेदारी का भार डाला जा सके नहीं मिले। 30 वर्षों से उनकी उन्नत मौजूदगी को चिकित्सा, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं बंगाल के साहित्यिक जीवन में महसूस किया है और नाम डॉ.सरकार हजारो लोगों में जाना माना था, जो उन्हें एक महान मार्गदर्षक और हैनीमैन के होम्योपैथी के विजेता के रूप में जानते थे उनका सारा जीवन होम्योपैथी के प्रचार और विकास में व्यतीत हुआ। हालांकि उनकी जंग भयंकर रूप ले चुकी थी, वह हमेषा उसमें आगे खड़े होकर उसका नेतृत्व करते रहे, और उन्होंने हमेषा बहुत उर्जा एवं न्याय संगत तरीके से हर परिस्थिति का सामना किया जिसके परिणामस्वरूप वह अक्सर विजयी रहें।

मुख्य बिंदु– होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति, महेन्द्र लाल सरकार।

प्रस्तावनाः

सी. आर.घोष की ख्वाहिश थी कि यदि वह कभी हिन्दुस्तान की होम्योपैथी का इतिहास के विषय में लिखे, तो अपने सहकर्मी स्वगीर्य डॉ. महेन्द्र लाल सरकार के पूरे जीवन के बारे में जरूर लिखेंगें। यह लेख अधूरा होगा यदि इसमें डॉ. सरकार जिसनें अपना पूरा जीवन होम्योपैथी को दिया और जिसनें अपने जीवन के बहुत से वर्ष होम्योपैथी के लिए लड़ते हुए हिन्दुस्तान में गुजार दिए, का सत्य इसमें नहीं दर्षाया गया।

महेन्द्र लाल सरकार का जन्म 2 नवम्बर 1833 ई. पेकपारा में हुआ, एक गांव जो कि पष्चिम हावड़ा से एक मील की दूरी पर था। वह अपने चाचा के घर नेबूतला कलकत्ता में बड़े हुए। उन्होंने अपनी प्रारंभिक षिक्षा के मूल तत्व अपने पड़ोस की पाठषाला गुरूमहासय में प्राप्त किए और स्वर्गाय ठाकुर दास डे, जोकि उनके बहुत आदरणीय थे और जिससे वह अपने जीवन के अंत तक जुड़े रहे, द्वारा अपना प्रथम अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त हुआ।[1]

डॉ. महेन्द्र लाल सरकार ने 1849 ई. तक डेविड हरे स्कूल में अपनी पढ़ाई जारी रखी, जब उन्हें छात्रवृत्ति प्राप्त हुई तब हिन्द् कॉलेज में प्रवेष पाने में सफल हुए। वह वहाँ सन् 1854 ई. के प्रारंभ तक पढ़े जहां वह सबके पसंदीदा व्यक्ति बने और उन्हें श्रीमान्

सटक्लिफ, प्राचार्य और गणित के प्राध्यापक और श्रीमान् जोंनस, प्राध्यापक साहित्य एंव दर्षन शास्त्र का अच्छा आषीर्वाद प्राप्त हुआ।

तत्पश्चात् उन्होंने चिकित्सा के महाविद्यालय में प्रवेष लिया। जिसके पश्चात् 1855 ई. में वैषाख के महीने में उनका विवाह हुआ। उनके इकलौते पुत्र अमृत लाल सरकार, का जन्म अगस्त 1860 ई. में हुआ था। महेन्द्र लाल सरकार को 1854–60 ई.,6 वर्ष चिकित्सा महाविद्यालय में कठोर पढाई करनी पड़ी जब तक कि उन्होंने एल.एम.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं करली।

डॉ. सरकार का चिकित्सा महाविद्यालय में असाधारण कैरियर था। उनको वनस्पति विज्ञान, मनोविज्ञान, शल्य चिकित्सा एवं प्रसूति चिकित्सा में कई पदक, पुरस्कार एवं छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। वह इतनें बुद्धिमान थे कि कई बार अपने प्राध्यापकों के पढ़ाने से पहले ही उन्हें अपने विषय की जानकारी होती थी।

डॉ. फेयरर के अनुरोध पर उन्होंने 1863 ई. में पहली बार स्नातकोत्तर (एम.डी.) की परीक्षा दी एवं प्रथम स्थान प्राप्त किया, डॉ. जगोबंधु बोस को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ, डॉ. सरकार कोलकाता विष्वविद्यालय से स्नातकोत्तर करने वाले दूसरे व्यक्ति थे, डॉ. चन्द्रकुमार डे प्रथम व्यक्ति थे।

इस वर्ष के अंत में चिकित्सा संघ की बंगाल शाखा की स्थापना डॉ. गुडीव चक्रवर्ती के प्रयासों से संभव हुई। डॉ. सरकार इसके पहले सविच नियुक्त हुए और तीन वर्ष पश्चात् उपाध्यक्ष नियुक्त हुए। इसके प्रथम दिन डॉ. सरकार ने होम्योपैथी की पूर्ण रूप से निंदा करने वाला भाषण दिया। इस भाषण ने स्वर्गीय राजेन्द्र लाल दत्त का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया जिनका सोचना था कि उन्हें एक सही आदमी मिला है जो अगर मान जाए और परिवर्तित हो जाए तो भारत में होम्योपैथी के लिए बहुत ही बड़ा मेजबान साबित होगा।

सिद्धांतों की एक प्रति दी और उनसे उसकी भारत के संदर्भ में समीक्षा करने को कहा। उन्होंने खुषी से यह स्वीकार किय उस वक्त वहां के अमीर और लोकप्रिय व्यक्ति, स्वर्गीय राजेन्द्र लाल दत्त प्रसिद्ध वेलिंगटन स्कवायर परिवार के सदस्य थे, चिकित्सा की ऐलोपैथिक व्यवस्था से असंतोष के साथ बड़े हुए तथा ईमानदारी और उत्साह के साथ होम्योपैथी चिकित्सा प्रारंभ की। समय के साथ वह मजबूती से स्थापित हो गए। राजेन्द्र बाबू ने डॉ.सरकार को मनाने की और होम्योपैथी के उपचारों की श्रेष्ठता को साबित करने के पूरे प्रयास किए लेकिन उनको कोई भी तर्क उनके काम नहीं आया। डॉ. सरकार तब तक भारत के पहुंचे हुए ऐलोपैथिक चिकित्सक बन चुके थे। वह प्रसिद्धि की उँचाईयों तक पहुंच चुके थे। डॉ. सरकार राजेन्द्र बाबू के पड़ोसी थे। डॉ. सरकार तथा अन्य ऐलोपैथी के चिकित्सकों के द्वारा प्रस्तुत किए गए बहुत से खतरनाक रोगियों को डॉ. बाबू ने मौत के

मुंह से बचाया। राजेन्द्र बाबू द्वारा किए गए उपचारों को डॉ. सरकार ने नहीं नकारा लेकिन उपचारों में कठार परहेज की आज्ञा दी।

एक दिन उनके एक मित्र ने उन्हें मॉर्गन की होम्योपैथी क्योंकि उन्होंने इस पुस्तक को ईष्वर के उपहार के रूप में देखा और सोचा कि उन्हें अब होम्योपैथी की निंदा करने का अवसर प्राप्त होगा और उसकी व्यवस्था की विसंगती और खोखलेपन को साबित कर पांएगे।

उस पुस्तक को प्रथम बार पढ़ने से उन्हें उस पर विष्वास हुआ, हालांकि उसकी समीक्षा बगैर पहले उस व्यवस्था को व्यवहारिक रूप से जाने हुए आसान नहीं होगा। डॉ. मार्गन ने उनसे तथ्य एवं आंकड़ों की दरखास्त की, और उसके सिद्धांतों को असंगत साबित करने से पहले उस व्यवस्था को व्यवस्थित देख–रेख और अनुसंधान किया जाना जरूरी है। इसके कारण उन्हें डॉ. राजेन्द्र बाबू के रोगियों के सुधार पर नजर रखनी पड़ी। इसके परिणाम स्वरूप वह मरीजों के पलंग के निकट पहुंचे और दुर्भाग्यवष उन्होंने जवान एवं फूल सी कुंवारी उनकी उम्र की लड़कियों और स्वास्थ्य तथा ओक वृक्ष के समान सषक्त लोगों को कुछ ही घंटो में मरते देखा।[2]

इन मरीजों को स्वस्थ होने का विष्वास था परंतु दुर्भाग्यवष और बड़ी शर्मिन्दगी की बात थी कि डॉ. सरकार का आत्म संयम तथा शासकीय उपचार उनके लिए कुछ नहीं कर पाया अंत में उन्होंने अपनी आखिरी सांसे ली। बिना किसी डर और विरोधाभास के यह दावा किया जा सकता है कि जब किसी मरीज की जिंदगी तेजी से खत्म हो रही हों और उसके बचने की कोई संभावना नजर न आए तब हमारे उचित उपचार की एक बूंद बुझत हुए दिए को फिर से रोषन करने का काम करती है। डॉ. सरकार ने यह महत्वपूर्ण तथ्य अपने व्यवसाय के दौरान लगातार सुना एवं महसूस किया। डॉ. सरकार कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे और इसलिए उन्होंनें होम्योपैथी का गहन अध्ययन किया। जब उन्होंने होम्योपैथी की व्यवस्था में हा रहे गंभीर अन्याय जैसे उन चिकित्सकों को निष्कासित कर देना जो होम्योपैथी चिकित्सा का अनुसरण कर रहे थे, को जाना तब उन्होंनें होम्योपैथी का अध्ययन प्रारंभ किया।

उन्होंने सार्वभौमिक रूप से निंदा योग्य चिकित्सा की होम्योपैथी पद्धति को अपनाया और साहस पूर्वक उन्होंने उसमें अपना विष्वास जताया, अपने सहकर्मियों और उस विष्वविद्यालय से बहिष्कृत किए जाने के बावजूद जिसके वह रत्न समझे जाते थे। डॉ. सरकार ने अपने अपराध को 1867 ई. में एक निर्भिक भाषण में स्वीकार किया। कलकत्ता की ऐलोपैथिक व्यवस्था उनके परिवर्तन क समाचार को जानकार रह गई। होम्योपैथी के उपचारों की उत्कृष्टता को समझते ही वह उसमें लग गए।

उनके परिवर्तन ने दुर्भावना की आग को भड़का दिया और हिप्पोक्रेट्स के अनुयायियों को क्रोधित कर दिया और इसके कारण उनका चिकित्सा संघ से बहिष्कार कर

दिया गया लेकिन यह सब उनके होम्योपैथी पर बढ़ रहे विष्वास को हिला नहीं पाए और वे उनके सामने एक चट्टान की तरह खड़े रहे। उनकी होम्योपैथी में दिलचस्पी और आकर्षण हर वर्ष के बीतने के साथ ही बढ़ता जा रहा था।

वह एक ऐसी जिंदा शक्ति थे जिसने भारत में होम्योपैथी को एक नई ऊचाई दी। ''द कोलकाता जर्नल ऑफ मेडिसिन'' उनके द्वारा सम्पादित हुई पत्रिका, उनके होम्योपैथी के ज्ञान की यादगार निषानी है और यह जर्मनी 1868 ई. में भारत में होम्योपैथी के बीज का हर खूट और कोने में बोने और अपन चिकित्सा में प्रतिद्वंदियों से लड़ने के लक्ष्य के साथ शुरू की गई थी। इस पत्रिका से ऐलोपैथी का काफी नुकसान हुआ और होम्योपैथी को अपनी मातृभूमि में पैर जमाने में सहयोगी रही। उनकी अविचलित निष्ठा से चिकित्सा शास्त्र के नए विज्ञान के दुर्भाग्यषाली रेगिस्तान को सांत्वना के झरने में परिवर्तित कर दिया।

डॉ. सरकार ने होम्योपैथी के सिद्धांतों को ग्रहण करने के लिए अपने दीप्तिमान व्यवसायिक कैरियर को कुर्बान कर दिया और यह तथ्य ही अकेला उनके साहस और स्वछंदता का साकार प्रमाण है।

सन् 1870 ई. में कलकत्ता विष्वविद्यालय में वे फेलो नियुक्त हुए और बहुकला के प्रध्यापक की निगरानी में रहे। 1878 ई. में विष्वविद्यालय के प्रबंधकों की वार्षिक सभा में प्रस्ताव द्वारा उन्हें चिकित्सा के प्रबंधक के सहयोग के रूप में नियुक्त किया गया।

भारत में विज्ञान संघ के उत्कर्ष की जरूरत डॉ. सरकार को महसूस हुई और इसको 1876 ई. में स्थापित किया, वह सिर्फ प्रतिष्ठित होम्योपैथ नहीं थे, बल्कि वे विज्ञान पुरूष थे उन्होंने अपने खून का कतरा–कतरा भारत में विज्ञान की प्रगति में लगाया। सिवाए डॉ. सरकार के किसी और अपने समय के भारतीय को नहीं जानते जिसनें देष को होम्योपैथी और विज्ञान में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी। उन्होंने हमें अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्तियों के बराबर लाकर खड़ा करना चाहा जैसा किसी ने नहीं किया। उन्होंने अपने पूरे जीवन विज्ञान संबंधी षिक्षा के फायदे एवं उपयोगिता को साबित करने के लिए प्रयास किए। संघ का काम उन्होंने बिना किसी अपने देषवासी के सहयोग के बगैर 30 वर्षों तक किया। इस साहस का उन्हें जुर्माना निराषा और साहस हीनता के रूप में चुकाना पड़ा।[3]

वह कुछ सहयोगियों व कुछ मददगारों से मिले। उन्होंने संघ की दुष्कर जिम्मेदारियां और कर्तव्य अपने लाभ पद व्यवसाय एवं अपना जीवन तक कुर्बान करके निभाया, अपने फर्ज और विष्वास को निभाने के लिए मरने को उन्होंने यशस्वी शहीद की मौत माना। उन्होंने साहस के साथ अपने जीवन को अपने श्रेष्ठ लक्ष्य को पाने के लिए खतरे में डाला, ऐसा लक्ष्य जिसनें उनकी सेहत को बर्बाद कर दिया। उन्होंने कई बार सत्य और फर्ज की खातिर आत्महत्या करने की कोषिष भी की और किनिक्स पक्षी की तरह नवयौवन व जोष के साथ अपनी ही राख से खड़े हुए।

डॉ. सरकार 1877 ई. में अपनी प्रेसिडेंसी के न्यायाधीष नियुक्त हुए और उन्होंने इस पद की जिम्मदारी को 20 वर्षों तक निर्वाह किया। 1883 ई. में उनको सी. आई. ई. की उपाधि से नवाजा गया।

ब्रिटिष सरकार ने उन्हें बहुत आदर के साथ बंगाल के लेजिस्लेटिव कॉउंसिल में 26 जनवरी 1887 ई. में सदस्य के रूप में नियुक्त किया, लेकिन मजबूरी–वश उन्हें 1887 ई. अपने आखिरी चुनाव में इस्तीफा देना पड़ा। वह कला विज्ञान के अध्यापकों के अध्यक्ष रहे (1893 ई.–1897 ई.) तक। वह 10 वर्षों तक सिंडीकेट के भी सदस्य थे।

बहुत वर्षों तक वह बंगाल की ऐषियाटिक समिति के परिषद् के सदस्य रहे। वह चिकित्सा के क्षेत्र में अकेले भारतीय थे जिसको कलकत्ता विश्वविद्यालय की डी.एल. डिग्री प्रदान की गई थी। 1898 ई. में यह डी.एल. डिग्री प्राप्त हुई। वह विज्ञान के उत्कर्ष के लिए जीवन भर ब्रिटिष संघ के सदस्य रहे, अमेरिका होम्योपैथी संस्था के समतुल्स सदस्य रहे और ब्रिटिष होम्योपैथिक सोसायटी के भी सदस्य रहे और वे फ्रांस की खगोलीय समिति के आजीवन सदस्य थे।

डॉ. सरकार दमा और मलेरिया बुखार से कुछ समय के लिए पीड़ित थे। वह स्ट्रेनजरी से भी पीड़ित थे। इन बीमारियों के कारण वह अपने आहार को कम करने के लिए मजबूर हो गए सब यह पढ़कर आष्चर्य चकित होंग कि 8 वर्षों तक वह पत्तल और मग पर जीवित थे।

इससे उनकी शानदार शक्ति निर्णायक रूप से साबित होती है, यह कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन के 70 वर्ष पूरे जिये।[4]

उनकी मृत्यु अस्थमा और स्ट्रेनजरी के कारण 24 फरवरी 1904 ई. को सुबह हुई। यह सार्वभामिक रूप से देषवासियों के लिए दुख का विषय था। वह घर जिसमें वह पैदा हुए थे, वैभव पूर्ण व्यवसाय जो उन्होंने ग्रहण किया, अपने आस पास साहित्य और समाज जो उन्होंनें भोग किया, यह सभी चीजे साथ ही साथ उनकी पैदायषी प्रतिभा और योग्यता के कारण ही वह वो बन पाए जो वे थे।[5]

नित्य काम करना उनकी एक कहावत थी। उनकी आत्मा इसी कहावत में चुपचाप ऐसे मौजूद थी जैसे मोती सीप में। डॉ. सरकार के जीवन का मूल सिद्धांत था बिना रूके कठोर कार्य वह सबसे ज्यादा परिश्रमी व्यक्ति थे जिन्हें एस.सी. घोष जानते थे।

वह कवल एक मजदूर की तरह प्रसिद्ध नहीं थे बल्कि वह कठोर परिश्रम और कठिन कार्य के लिए प्रेरणा के श्रोत माने जाते थे।

उन्होंने सुस्पष्ट अर्थपूर्ण उपदेष दिए। वह उपदेष तार्किक, विचारपूर्ण, पूर्ण रूप से उनके द्वारा इच्छित या अनुमानित, सीधा और विषय पर केन्द्रित होता था। वह हमेषा प्रयास करते थे कि ऐसा कोई शब्द मुंह से न निकले जिसका वह बचाव न कर सकें।

वह व्यवसायिक पत्रिकाओं के बहुत बड़े पाठक थे। इन अवधिक पुस्तकों की संख्या असंख्य थी और यह पत्रिकाएं सावधानी से, गंभीरता से और गहराई से पाठन किया जाता था और सभी अहम योगदान सावधानी से लिखे जाते थे।

उनकी उदारता हर चीज में अपार थी, और वह कभी भी किसी स्वार्थ पूर्ण कार्य के लिए नहीं जाने गए या किसी स्वार्थ पूर्ण विचार को व्यक्त करते हुए पाए गए। उनके परोपकारी अषंख थे, लेकिन वह कभी भी उसका दिखावा नहीं करते थे।

उन्होंने अपने जीवन में कोई भी ऐसा अनुचित कार्य नहीं किया जिससे उनका नैतिक प्रभाव कम हो। जो लोग उनके चरित्र और प्राकृति को अच्छे से नहीं जानते थे वह उन पर कठोर नियमों वाले व्यक्ति जैसा प्रभाव डालते थे। वह कई बार अपने सिद्धांतों के लिए कठोर बन जाते थे। कठोरता उनकी आदत से वैसे ही दूर थी जैसे धोखेबाजी, वह बहुत ईमानदारी एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति थे जिससे सरतचंद्र घोष मिले थे। उनकी धार्मिक एंव पुण्य आत्मा कभी भी अपने स्वभाव को नही छोड़ती थी चाहे कितनी विषम परिस्थितियां हो। डॉ.सरकार का जीवन सरलता एवं महानता का सामंजस्य पूर्ण समिश्रण था।

एक चिकित्सक के रूप में खास तौर पर होम्योपैथिक चिकित्सक के रूप में भारत में इनकी बराबरी पर कोई नहीं था और वह प्रसिद्धि के चरम सीमा पर पहुंच गए थे। उनके मरीजों के लिए उनकी निष्ठा आष्चर्यजनक और माननीय् क्षमताओं को पीछे छोड़ने वाली थी। वह अचूक नुस्खा लिखते थे, क्योंकि चिकित्सा के क्षेत्र में उनका ज्ञान बहुत विषाल था। डॉ.सरकार एक निषान छोड़ने वाले व्यक्तित्व के स्वामी थे। संस्कारी, बुद्धिमानी और अखण्डता का पालन करने वाले थे वह सार्वभामिक रूप से प्रषंसा और आदर के पात्र थे और जहां–जहां होम्योपैथी जानी जाती है वहां–वहां उनकी मृत्यु के कारण शोक और पश्चाताप था।

सारांश

उनकी आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के प्रति निष्ठा ने उन्हें धर्म और आध्यात्मिकता के दावों के प्रति अंधा नहीं किया था। आस्था का ईष्वरीय सिद्धांत जो कि सभी तंतु और नैतिक लक्षणों के इंद्रिक पदार्थों से लिपटा हुआ था, इसी ने उन्हें उठाकर प्रतिष्ठा की ऊचाईयों पर पहुंचाया था और उनके नाम को अमर कर दिया था। कई लेखकों ने कहां है कि किसी व्यक्ति की जगह खाली होने बाद कोई और उस जैसा मिल जाता है उसकी जगह भरने को लेकिन दुर्भाग्यवष यह बात डॉ. सरकार के मामले में लागू नहीं होती।

संदर्भ सूची

- सिंह, महेन्द्र, हिस्ट्री ऑफ होम्योपैथी इन इंडिया, इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ हिस्ट्री होम्योपैथी, कलकत्ता, 1997,पृ.–4.
- सिंह, महेन्द्र, पायोनियर्स ऑफ होम्योपैथी, बी.जैन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011,पृ–243.
- पूर्वोक्त, पृ.–4–5.
- वही, पृ.–5–6.